ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

डॉ. गरिमा चारण की कविताएँ

45-46 एकता नगर रमजान जी का हत्था ,
अनन्त लुइस स्कूल के पास जोधपुर -342015
gajucharan656@gmail.com

यादों में उम्र बीता दे कोई.....

काल के न हो वशीभूत
देखूं तुझे हर और
बादलों की घटाटोप में
दामिनी की चकाचोंध में
आईने के गुनाह को
माफ किया हमने
अक्स जो भीतर था
बयां किया हमने
कविता की रेखाओं में
गूंथ दिया हरश्रृंगार को
कब नहीं देखा तुमको
रब में ढूंढा तुमको
पदचाप की थिरकन में
स्वंय की अनमनी हसी में
सड़क किनारे इंतजार करते
एक अदभुत मुस्कान लिए
तू आ जाता सामने यकायक
स्थिर हो जाती मेरी रूह
पूछ बैठती मुझसे ही
क्या इसी की थी आरजू
न जाने कितने सवालों से
दिन बीत जाता मेरा
न जाने कितने उत्तरों की
प्रतीक्षा में रात ढल जाती
बात जो हमने जानी है
संग चाहे तू रहे न रहे
वो बात जो अधरों पर
युगों युगों से भटक रही
में समझती हूं अल्फ़ाज़ों को
उन पर गीली पड़ी सीलन को
क्या यह कम है जीवन में
हृदय में बसा दे कोई
कहे न उम्र भर चाहे
यादों में उम्र बीता दे कोई.....

अंतराल

साँसों में अंतराल
बन गया विकराल
आकार देता तुझको
साकार करता मुझको
हो तुम्ही मेरे जीवन राग
साँसों की लय ताल
समीर कण सी सिक्तता
नेत्र की रिक्तता
बिम्ब जीवन का मूर्त
बूँद सा निर्मल ,शीतल
भीतर का उद्वेलित गान
हर मोड़ में रह जाता क्यों

मध्य तेरे मेरे अंतराल
होड़ तुमतक पहुंचने की
बालू सी में फिसल जाती क्यों
थामना चाहती तेरा दामन
हथेली की रेखाओं का आंलिगन
बीच रह जाता अंतराल
कौन विधि में खोजूं तुमको
तू मेघ मध्य दामिनी बन रहा
तू रक्त में वेग बन बह रहा
मेरे हृदय में रम जायेगा
उस लोक में तू विशाल
पट जायेगा वही युगों का अंतराल ..।

खनक

भोर में देखा दृश्य विधान
शाख से पत्ते का बिछोह
शांत नीरवता खनक ध्वनि
विरह का अचल सन्निपात
समीर मन्द अस्थिर आलोड़न
डोल उठा वो पर्ण विकृत
पत्ते की नियति वो जानता
हरित वैभव ,पीत वर्ण मानता
सड़को पर बिखरा बेसुध
पीत आभा लिये वो संघर्षरत
आ पहुंचा पद भार ,
हो उठा वो दोलित
फुट पड़ा सारा जीवन,
चरमर से निकल पड़ा सरगम
व्यथा का समस्त अंकन
एक खनक महाविशेषांकन ,
भाषा की रेखा क्या समझ पाते
मेरे ध्वनि अक्षर तुम्हे समझ आते?
भीतर का कलम मजदूर जग गया
एक महाकाव्य रचा गया
इतना भर संसार
स्तम्भ जीवन समीर संचार
आज खनक पर लिख रही
बरसों की व्यथा अपार
तेरा वृक्ष से विच्छेदन
धरा से भी तो नव आलिंगन
किन्तु शोक क्यों मनाता है
परिवर्तन प्रकृति का जयघोष है
नवीनता का अमर गान
तुमसे ही तो कवियों का
चलता कर्म विधान
एक तेरी ही उपमा
जीवन्त कर देती
भर देती प्रेम विश्वास .....

निर्णय

समेटे स्वंय का आभासित अस्तित्व विधान
एक रात्रि कलरव कर रहा था इंसान
स्वंय का स्वंय से समर
दृष्टित होता न अटल निदान
आज युगों के बेला गंभीर
रिक्त सिक्त बाहुबल धीर
मन की मन में ठान ली
आहुति का रची जाये वेदी

निर्णय विधान था अंचभित
पा सकने को वो प्रेम पथिक
आज लगायेगा बाजी विचित्र
आलोकमय प्रभात रक्तरंजित
डूब पार हो जायेगा आज
भँवर का थर थर कम्पन
लील सकने को उसकी शक्ति
हर दिशा लेती ,परख विपत्ति
किन्तु मन भीतर का विश्वास
एक मन ,एक अमर आस
लय ,गति ,यति का संयोजन
बंध लेता सकल विश्वास मन
अटल निर्णय से जो निकला वीर
प्रेम नाव की ले पतवार
पार हुआ वो नाविक
निकल गया उस पार
हृदय में जीवन रस लिये
अधरों में कंठ गान मल्हार.....

उस एक ईदी पर सृष्टी
का वैभव अर्पित करती हूं
अपनो के तुम घाव देख सकते नहीं
फिर कहां से लाते घाव पर घाव करते
अपने इच्छा पूर्ति को नाम पर्व का देते
क्या सच बताना तुमने बिना पर्व के
कभी नहीं खाया जीव को
जो एक दिन और उल्लास
जोड़ दिया अपने जीवन मे
रुक कर एक बार संवेदना से
देख लेना उसकी निश्छल आंखों में
उसकी कराह,चीख,तड़प में
शायद तुममें मानवता का कुछ
अंश रोक सके हत्या करने से
और न भी जगे भाव तो एक बार
हाँ एक बार सिर्फ अपने बच्चे की
आंखों में देख लेना कितनी समानता
नजर आती है तुम्हे,कोई मानवता.....

.....

मनुष्यत्व

हमने तो एक ही बात जानी है
दुनिया की कैसी ये रवानी है
एक पर्व के मस्तक पर
रक्त अभिषेक चढ़ रहा
मानव कैसा हैवानी है
ईद हमने भी अनुभूत की
उस हामिद के चहरे पर
जिस दिन उसने खरीदा था चिमटा
लिपट कर रोया था माँ से।